

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

सर्वोपरिता प्राप्त करने के लिए घोर कष्टों का सामना किये बिना कोई बच नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्त्तव्य बुद्धि के परिष्कार से ही गुणों की पराकाष्ठा तक पहुँच पाना संभव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यश की अभिलाषा आंतरिक हो और किसी आदर्श पर प्रतिरोपित हो तो ही मनुष्य कठिनाइयों के उच्च शिखर पर चढ़ता चला जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्गुणों के प्रति निष्ठावान् होने से सर्वोपरि सम्मान मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चा सम्मान गुणवान् को ही प्राप्त होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठता प्राप्त करने का अभ्यास आवेश या अंधानुकरण पर आधारित न हो, अन्यथा अधिक देर तक उस सत्कर्म में टिके रहना संभव न होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पाना या खोना भाग्य के हाथ की बात नहीं है, वह तो मनुष्य के पौरुष-अपौरुष का फल है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म वह है, जो मनुष्य को क्षुद्र जीवन से उठाकर महान् और आत्मदर्शी बनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख का आधार धर्म और सदाचार है। इसके बिना मनुष्य वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर दर्शन की आकाँक्षा मनुष्य की संपूर्ण कामनाओं की साधक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्रत का आध्यात्मिक अर्थ उन आचरणों से है जो शुद्ध, सरल और सात्विक हों और उनका पालन विशेष मनोयोगपूर्वक किया गया हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का पहला पुरुषार्थ है-जीवन लक्ष्य में प्रमाद न होने देना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची जिज्ञासा से ही भगवान् मिलते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची उपासना का सच्चा प्रतिफल यही है कि मनुष्य अधिकाधिक आदर्शवादी एवं उत्कृष्ट जीवन जी सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य जाति की सर्वोपरि प्रेरक शक्तियाँ हैं- शक्ति और धर्म।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

पाप और अधर्म की दुष्प्रवृत्तियों से समय रहते सावधान हो गया, वही सच्चा साधक-सच्चा आध्यात्मवादी कहा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-बल की उपलब्धि का एक सुख, संसार के करोड़ों सुखों से भी बढ़कर होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची प्रार्थना वह है जो चिरस्थायी, सद्भावना का रूप धारण कर प्राणी मात्र की कामनाओं के लिए सहानुभूति बनकर विचलित होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपराधी किसी का सगा नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो बिना किसी कामना या इच्छा के साधना करते हैं, उन्हें ही ईश्वर का सच्चा प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्थान का मूल स्रोत भौतिक सामग्री में नहीं, आत्मिक स्तर में ही सन्निहित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिन्ता एक प्रबल मनोव्याधि है। इससे मानसिक शक्तियों का नाश होता है और शरीर पर दूषित प्रभाव पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिन्ता वास्तव में एक ऐसा रोग है जो अंदर ही अंदर जलाता रहता है और सारे रक्त-माँस को जलाकर राख कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिन्हें इस जीवन में किसी प्रकार के सुख की आकाँक्षा हो, उन्हें सर्वप्रथम चिन्ता रहित बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शक्ति शरीर की बिजली है और कर्म प्रकाश। हमारी शक्ति जितनी प्रगाढ़ होगी क्रिया की रोशनी उतना ही जगमगायेगी और दूसरों को रास्ता बतायेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बेमन काम करना एक भारी दुर्गुण है। इससे सफलता का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिन्ताओं से मुक्ति पाने का सरल उपाय यह है कि सदैव कार्य करते रहें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज में बेईमान, धोखेबाज लोग अधिक होते हैं, वहाँ शान्ति, प्रेम, मैत्री, सद्भावना के संबंध स्थिर नहीं रह पाते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी भी कारण झूठ बोलते रहने पर धीरे-धीरे यह अभ्यास परिपक्व हो जाता है और मनुष्य जाने-अनजाने हर समय झूठ बोलने लगता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम अपनी सुख-सुविधाओं की बात सोचें, पर औरों के प्रति सच्चे हृदय से कर्तव्य पालन करने की इच्छा करें तभी हमारा भला होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

जीवन लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है, जब हममें सदिच्छाएँ जाग्रत हों, औरों के प्रति शुभकामनाओं का विकास हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इच्छा वह आग है, जो वृत्ति की आहुति से और प्रखर हो उठती है। एक पर एक अंधाधुंध इच्छाएँ यदि उठती रहें तो मानव जीवन नारकीय यंत्रणाओं से भर जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ ही जिनकी वृत्ति होती है उन्हें औरों की आत्मीयता से वंचित रहते कभी किसी ने नहीं देखा होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहानुभूति मानव अंतःकरण की गहन मौन और अव्यक्त कोमलता का नाम है। इसमें स्वार्थ और संकीर्णता का कहीं भी भाव नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सार्वभौमिक प्रेम नियम और ज्ञान प्राप्त करने का आधार सहानुभूति है। इससे सारा संसार एक ही सत्ता में बँधा हुआ दिखाई देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मौन वाणी की शक्ति को संशोधित और संवद्धित करने की साधना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों के दुःखों में अपने को दुःख जैसे भावों की अनुभूति हो तो हम कह सकते हैं कि हमारे अंतःकरण में सच्ची सहानुभूति का उदय हुआ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सभी में अपनापन समाया हुआ देखने की भावना इतनी उदात्त है कि इसकी शीतल छाया में बैठने वाला हर घड़ी अलौकिक सुख का आस्वादन करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की कठिनाई, मुसीबतों को अपना दुःख समझकर सेवा करने का नाम सहानुभूति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

करुणा के साथ कर्तव्य का सम्मिश्रण ही सहानुभूति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची सहानुभूति वह है जो दूसरों को उदारतापूर्वक समस्याएँ सुलझाने में सहयोग दे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहानुभूति मानवता का उच्च नैतिक गुण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बदले में कुछ चाहने की भावना से सहानुभूति की सार्थकता नहीं होती, इसे तो व्यापार ही कह सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहानुभूति चरित्र की वह गरिमा है, जो दूसरों का मन मोह लेने की क्षमता रखती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहानुभूति से मन निर्मल होता है, पवित्रता जागती है और बुद्धि प्रखरता से व्यक्तित्व निखर उठता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

साध्य कितना ही पवित्र,
उत्कृष्ट क्यों न हो यदि उस तक
पहुँचने का साधन गलत है,
दोषयुक्त है तो साध्य की
उपलब्धि भी असंभव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो सच्चाई के साथ
अपना कार्य करता है उसे ही
सिद्धि मिलती है। कर्म साधना
ही साध्य की अर्चना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सधा हुआ, निर्मल,
स्वस्थ मन जीवन सिद्धि के
लिए एक वरदान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचार, भाव तथा क्रिया
में अत्यन्त सूक्ष्म ग्रहणशीलता
रखते हुए सांसारिक विषयों के
प्रति निरपेक्ष बने रहने का
नाम वैराग्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वैराग्य उस अवस्था या
स्थिति का नाम है जब मनुष्य
की चित्त वृत्तियाँ विभिन्न भावों
से हटकर चिर सत्य की ओर
जाग्रत् हों।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वैराग्य का अर्थ है-
त्याग, समर्पण, विवेक और
सत्य के प्रति श्रद्धा की अनन्य
भावना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पुरुषार्थी सफलता के
लिए किसी के सहारे या कृपा
की प्रतीक्षा नहीं करता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसमें पूरी शक्ति से
काम करने का दृढ़ लगन है
उसके मार्ग में चाहे कितना
प्रबल विरोध का प्रवाह आये
वह उसकी गति को अवरुद्ध
नहीं कर सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

काफी योग्यता रहते हुए
भी शिथिल प्रयत्न, अधूरे मन
से काम में लगने वाले
असफल हों तो इसमें किसी
का क्या दोष।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थजीवी व्यक्तियों
के जीवन में कभी निराशा पैदा
नहीं होती, यह उतना ही सत्य
है जितना सूर्य अपनी यात्रा
से कभी नहीं थकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असह्य कठिनाइयों के
बीच जिनका विद्या प्रेम
अक्षुण्ण बना रहता है वे
अवश्य ही एक दिन माँ भारति
के वरद पुत्र बनकर रहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोरा आदर्शवादी अपने
वाक्जाल में सर्व-साधारण को
फाँसकर उन्हें राह तो दिखाता
है, किन्तु स्वयं उस मार्ग पर
नहीं चलता यह एक भयंकर
आत्म-वंचना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दान समाज में
आर्थिक संतुलन पैदा करने,
विषमताएँ दूर करने का
रचनात्मक विधान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गृहस्थी मनुष्य की
सर्वार्णपूर्णता का विद्यालय है
और विवाह उसका प्रवेश।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हमारा प्रत्येक शब्द
हमारे अंतःकरण पर एक
अमिट गुप्त छाप छोड़ जाता है
जो हमारे स्वभाव और चरित्र
के निर्माण में योग देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

जो सदैव ईर्ष्या, द्वेष, परछिद्रान्वेषण के विचारों में डूबे रहे हैं वे अकारण ही अपनी मानसिक शक्तियों का अपव्यय करते रहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य आत्म दुर्बल तभी तक रहता है, जब तक आत्म-विवेचना का सच्चा स्वरूप ग्रहण नहीं करता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

महानता के विकास में सबसे बड़ी बाधा असंयम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कार्य व्यस्त व्यक्ति फुरसत न मिलने के कारण बुराइयों से बचा रहता है, पर बेकार आदमी के लिए तो सर्वनाश का द्वार खुला पड़ा रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय और सामर्थ्य रहते हुए भी जो श्रम जैसे मित्र का तिरस्कार करके जीवन के बहुमूल्य क्षणों को व्यर्थ गँवा रहे हैं, वे बड़े अभाग्य हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर विश्वास का-आस्तिकता का प्रतिफल एक ही होना चाहिए सन्मार्ग का अवलम्बन और कुमार्ग का त्याग।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसे किसी प्रकार वक्त गुजारते रहना प्रिय है, उस आलसी को जीवित मृत ही कहा जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गुण देखें, गुणों की चर्चा करें, गुणवानों को प्रोत्साहित करें तो यह स्वभाव अपने लिए भी परम मंगलमय सिद्ध हो सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रोत्साहन और प्रशंसा करने में जिसकी जीभ रुकती है, वह सबसे निकृष्ट कोटि का कंजूस है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दमन और दण्ड से, निन्दा और तिरस्कार से कोई दुर्गुण दब तो जाते हैं, पर अवसर मिलने पर वे प्रतिहिंसा के साथ और भी भयंकर रूप में प्रकट होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि निन्दा करना ही हमने सीखा है तो सब कोई अपने शत्रु बनते जायेंगे और अपनी सीख को भी दुर्भावना मानकर उसके प्रतिकूल आचरण करेंगे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रशंसक बनकर हम हर व्यक्ति के मित्र बन सकते हैं, उसे समझाने और सुधारने में भी सफल हो सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्गुणों की वृद्धि होना मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी ही बुराइयों के कारण दुर्गुणी व्यक्ति अपना सर्वनाश करता रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो परिस्थितियाँ हमें अपने लिए कष्टकारक लगती हैं, उनमें भी परमात्मा का सत्प्रयत्न और सद्बुद्देश्य छिपा रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

असुर वे हैं जो अपना छोटा स्वार्थ साधने के लिए दूसरों का बड़े से बड़ा अहित कर सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

देवता वे हैं जो अपने अधिकारों को भूलकर कर्तव्य पालन को ही स्मरण रखते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इस सुरदुर्लभ मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग जो हो सकता है वह कर डालें, यह महत्वाकांक्षा प्रशंसनीय है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-विश्वास का अर्थ है अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहना और कठिनाइयों से तनिक भी विचलित न होना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर को मनुष्य के दुर्गुणों में सबसे अप्रिय अहंकार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कामनाएँ अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर रखने की भूल जब तक बनी रहेगी, तब तक आनंद का दर्शन दुर्लभ ही रहेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असफलता खेदजनक होते हुए भी कटुवादी सहृदय मित्र की तरह बहुत कुछ लाभदायक सिद्ध होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रमशील की योग्यता, प्रतिभा, क्षमता एवं सूझबूझ निरन्तर बढ़ती जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उदारता और दूरदर्शिता का दूसरा नाम बड़प्पन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कठिनाइयों और समस्याओं से रहित जीवन निर्जीव और आनंद रहित होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति के मार्ग पर चलने वाले को उसकी अंतरात्मा निरन्तर धिक्कारता रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ठाट-बाट से अमीरी सिद्ध हो सकती है, बड़प्पन प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जल्दी सफलता प्राप्त करने के लोभ में अनीति के मार्ग पर चल पड़ना ऐसी बड़ी भूल है जिसके लिए सदा पश्चाताप ही करना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति और असफलता में से यदि एक को चुनना पड़े तो असफलता को ही पसंद करना चाहिए, अनीति को नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सफलता की अपेक्षा नीति श्रेष्ठ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

आत्म निर्माण ही युग
निर्माण का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
कदम हो सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सभ्य समाज वही
कहा जाएगा जिसमें नर के
समान नारी को भी न्याय
एवं विकास का अधिकार
प्राप्त हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर को निरभिमानता
ही प्रिय है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय एक प्रकार का
रुपया है। उसे जिस काम में
भी खर्च किया जाएगा उसी
दिशा में प्रगति होने लगेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सादगी ही सज्जनता
की पोशाक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बिगड़ा हुआ मन ही
मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु
और सुधरा हुआ मन ही
मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अपना एक-एक
मिनट बहुमूल्य समझकर उसे
सुव्यवस्थित कार्यक्रम बनाकर
खर्च करते हैं वे अपने जीवन
का सच्चा लाभ उठा लेते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आलस्य से आराम
मिल सकता है, पर यह आराम
बड़ा मँहगा पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो मेहनत से जी चुराते
हैं, शरीर को कष्ट देने में
बेइज्जती समझते हैं, वे अपनी
भूल का परिणाम दुर्बलता और
अस्वस्थता में ही प्राप्त करते
हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानवीय गौरव का
पुनरुत्थान धन, वैभव बढ़ने
से नहीं, सद्भाव बढ़ने से
संभव होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लोकमंगल की
सर्वकल्याणकारी सत्प्रवृत्तियों
से ही किसी व्यक्ति, देश, धर्म,
समाज तथा संस्कृति की
उत्कृष्टता नापी जा सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य शरीर में प्रसुप्त
देवत्व का जागरण करना ही
आज की सबसे बड़ी ईश्वर
पूजा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज का प्रबुद्ध
वर्ग सोचता तो बहुत हैं, पर
करता कुछ नहीं वहीं निष्क्रियता
का मरघट जैसा सन्नाटा छाया
रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की सेवा से
बढ़कर परमात्मा की सच्ची पूजा
और कुछ हो नहीं सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आदर्श जीवन बनाने,
बिताने के लिए जितना
इच्छुक, आतुर एवं प्रयत्नशील
हैं, वह उतने ही अंशों में
आस्तिक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

जिसकी अपनी
आत्मा संतुष्ट है, प्रसन्न है
उसका ईश्वर भी प्रसन्न है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा के संतोष का
ही दूसरा नाम स्वर्ग है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उद्धा, आदर्शवादी,
पवित्र, महान् बनने की
अभिलाषा आस्तिकता है। इसे
अपनाना हर अध्यात्मवादी का
प्रथम कर्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्बलता एक पाप है,
जिसके कारण दूसरों को
अन्याय, शोषण एवं आक्रमण
करने का प्रलोभन मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्बलता, मानसिक
और सामाजिक अशान्ति की
जननी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पवित्रता, सात्विकता,
सहृदयता जैसी देवी
संपत्तियाँ जिसके पास हैं, वह
संसार का सबसे बड़ा धनी
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने अज्ञान को दूर
करके मन-मंदिर में ज्ञान का
दीपक जलाना भगवान् की
सच्ची पूजा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म निर्माण सबसे
बड़ा पुण्य पुरुषार्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विषय, विकार,
अज्ञान, कुसंस्कार और
कुविचारों से छूटना सबसे बड़ी
स्वतंत्रता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

छल चाहे मनोरंजन के
लिए ही क्यों न किया जाय,
उसके मन में आने से
आत्मिक पतन ही होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो दूसरों को धोखा देना
चाहते हैं, वास्तव में वह अपने
आपको ही धोखा देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी के विचार सुधार
देने, उसकी विचारणा सही कर
देने से बढ़कर और कोई पुण्य-
परोपकार हो नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ प्रबुद्ध लोगों की
संख्या नहीं रहती वहाँ पाप
और पतन का भयानक
अंधकार छा जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ के प्रबुद्ध लोग
धर्म का ढोंग बनाकर अपना
स्वार्थ सिद्ध करते हैं, वहाँ की
जनता मूढ़, दिग्भ्रान्त एवं
अनास्थावान् बन जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज का प्रबुद्ध
वर्ग सतेज, समर्थ और
सक्रिय है, उसे उन्नति के उच्च
शिखर पर पहुँचते देर नहीं
लगती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

कोई देश दौलत, शिक्षा, कला, कौशल के आधार पर समृद्ध नहीं होते, समृद्धि का स्रोत तो प्रबुद्ध लोगों के व्यक्तित्व होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुष्ट और दूषित वातावरण में रहकर हम समृद्ध एवं सुसंस्कृत होते हुए भी सुखी नहीं रह सकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंतःकरण को स्पर्श करने वाली सुधारने और ढालने की विद्या का नाम ही अध्यात्म है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भगवान् भावना की उत्कृष्टता को ही प्यार करते हैं और सर्वोत्तम सद्भावना का एकमात्र प्रभाव जनकल्याण के कार्यों में बढ़-चढ़ कर योगदान करना ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो माला तो बहुत भारी फेरते हैं, पर विश्व मानव की सेवा का अवसर सामने रहने पर भी पत्थर की तरह निष्ठुर और कठोर बने बैठे रहते हैं, वे झूठे भक्त हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्विचार निर्माण के लिए यदि संसार का सारा धन खर्च हो जाये या सारा समय लग जाये तो भी उसे कुछ घाटे की बात नहीं माननी चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय और धन का उपयोग जिसने ठीक प्रकार करना जान लिया, वस्तुतः वही सच्चा बुद्धिमान् है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लोकमंगल की सर्व-कल्याणकारी सत्प्रवृत्तियों से ही किसी व्यक्ति, देश, धर्म, समाज तथा संस्कृति की उत्कृष्टता नापी जा सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस देश में सृजन कौशल में निपुण माताएँ होती हैं, वह देश मनुष्यों का नहीं, देवताओं का देश हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मातृत्व नारी के जीवन का सर्वोत्कृष्ट गौरव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर और नारी का दर्जा समानता का है। जीवात्मा और प्रकृति की दृष्टि से उनमें छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं किया गया है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और नारी भावना की प्रतिमा है। बुद्धि और हृदय के समन्वय से ही व्यक्तित्व में पूर्णता आती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चरित्रवान् माता-पिता ही श्रेष्ठ संतान को जन्म देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी स्वतंत्रता का तात्पर्य है-जो प्रकृति माँ ने प्यार, ममता, शक्ति, नारीत्व दिया है उसको सही अर्थ में समझकर पुरुष के पीछे न चलकर अपनी कार्य शक्ति और स्वरूप को पहिचानें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि हमें अपना हित करना है, परिवार एवं समाज तथा विश्व का कल्याण करने की कल्पना करते हैं तो नारी को हमारे समान स्तर पर पाकर ही कर सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

जिस प्रकार की राष्ट्र की जननी नारी होगी, राष्ट्र भी उसी प्रकार का बनेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि हम अपने परिवार को आदर्श अथवा उच्च बना लिया तो मानो विश्व को उन्नत करने का अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-परिष्कार की साधना का नाम ही अध्यात्म है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी ही अपनी योग्यता, दक्षता एवं कुशलता के अनुसार समाज को अच्छे-बुरे सदस्य और राष्ट्र को नागरिक देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्धारित्र, निःस्वार्थ लोकसेवी ही किसी राष्ट्र को ऊँचा उठा सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्यार और सहकार से भरा-पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार का प्रत्येक प्राणी माँ के गर्भ से जन्म लेता है, उसकी गोद में पलता है और उसका ही स्वभाव-संस्कार लेकर बढ़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शिष्टता सभ्यता की आधारशिला है और अशिष्टता अनगढ़पन की प्रतिक्रिया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्ज्ञान और सत्कर्म, यह ईश्वर प्रदत्त दो पंख हैं, जिनके सहारे स्वर्ग तक उड़ सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वच्छता भरी सादगी नारी का सर्वोपरि शृंगार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शालीनता बिना मोल मिलती है, पर उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानसिक और सामाजिक अशान्ति की जननी दुर्बलता ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिवार एक पवित्र तथा उपयोगी संस्था है। इसमें मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार सहयोग-सहायता और पारस्परिकता का भाव रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी प्रशंसा आप न करें, यह कार्य आपके सत्कर्म स्वयं करा लेंगे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

फूलों की सुगंध हवा के प्रतिकूल नहीं फैलती, पर सद्गुणों की कीर्ति दसों दिशाओं में फैलती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

सज्जनता का मार्ग सबके लिए श्रेयस्कर है। उसी में व्यक्ति का चिरस्थायी उत्थान और कल्याण सन्निहित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनोवृत्तियों को वासना और तृष्णा से विरत कर संयम और परमार्थ में प्रवृत्त करना ही साधना का उद्देश्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चे अर्थों में मनुष्य उसी को कहा जा सकता है, जो मानवी उत्कृष्टता की अवधारण करके शालीनता, कर्मठता और परमार्थ परायणता का परिचय दे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुविधा-साधनों के बाहुल्य को प्रगति का नाम भले दें, यदि चिंतन, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता है तो वस्तुतः है अवगति ही।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भूल सुधार मनुष्य का सबसे बड़ा विवेक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों से अपने लिए जिस प्रकार के व्यवहार की आशा करते हैं, वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करना यही ईमानदारी की समग्र परिभाषा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निराशा को आशा में, उपेक्षा को पुरुषार्थ में बदल देना, नये आधारों को लेकर सृजनात्मक साहस को उत्तेजना देना युग मनीषियों का काम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ सच्चा प्रेम है, आध्यात्मिक आत्मीयता है वहाँ त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की भावना होना अनिवार्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सत्कर्म लोक-परलोक, जन्म-जन्मान्तर, सभी जगह और तीनों कालों में सदा सुखकर ही होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञानवान् वह है, जिसने आनंद की खोज के मूल स्रोत अंतःकरण में विद्यमान होने की मान्यता परिपक्व कर ली है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शिक्षा सांसारिक जानकारी देती है, उसकी पहुँच मस्तिष्क तक है। विद्या अंतःकरण तक पहुँचती है और उसके द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण-निर्धारण होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ के प्रबुद्ध लोग धर्म का ढोंग बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, वहाँ की जनता मूढ़, दिग्भ्रान्त एवं अनास्था-वान् बन जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-निर्माण सबसे बड़ा पुण्य परमार्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म की सेवा, नीति और सदाचार की अभिवृद्धि में तत्परता एक ऐसी तपश्चर्या है, जिससे प्रभावित हुए बिना ईश्वर रह ही नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई भी कार्य अपने आपमें न पाप है और न पुण्य। पाप और पुण्य का निर्धारण उस कार्य के पीछे विद्यमान दृष्टिकोण एवं उद्देश्य के अनुसार किया जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

धर्मतंत्र को सशक्त बनाना
संसार की सबसे बड़ी सेवा और
ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वर्ग और नरक दोनों ही
मात्र अनुभूतियाँ हैं, जिनको हर
व्यक्ति इच्छानुसार अपने लिए
विनिर्मित करता एवं बदलता
रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन का अर्थ है -
चेतना, अस्तित्व का बोध तथा
अपने अधिकार और कर्तव्य का
ज्ञान।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर बुद्धि का
प्रतिनिधित्व करता है और नारी
भावना की प्रतिमा है। बुद्धि
और हृदय के समन्वय से ही
व्यक्तित्व में पूर्णता आती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी के संबंध में
संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाकर
हम न केवल अपना, अपने
परिवार का वरन् समस्त
संसार का अहित ही करते
हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुष्ट और दुषित
वातावरण में रहकर हम समृद्ध
एवं सुसंस्कृत होते हुए भी
सुखी नहीं रह सकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनत्व को सिकोड़
लेना क्षुद्रता और उसे व्यापक
बनाकर चलना महानता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनत्व को सिकोड़
लेना क्षुद्रता और उसे
व्यापक बनाकर चलना
महानता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर बुद्धि का
प्रतिनिधित्व करता है और नारी
भावना की प्रतिमा है। बुद्धि
और हृदय के समन्वय से ही
व्यक्तित्व में पूर्णता आती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन का अर्थ है -
चेतना, अस्तित्व का बोध
तथा अपने अधिकार और
कर्तव्य का ज्ञान।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुष्ट और दूषित
वातावरण में रहकर हम समृद्ध
एवं सुसंस्कृत होते हुए भी
सुखी नहीं रह सकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी के संबंध में
संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाकर
हम न केवल अपना, अपने
परिवार का, वरन् समस्त
संसार का अहित ही करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वर्ग और नरक दोनों
ही मात्र अनुभूतियाँ हैं, जिनको
हर व्यक्ति इच्छानुसार अपने
लिए विनिर्मित करता एवं
बदलता रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्मतंत्र को सशक्त
बनाना संसार की सबसे बड़ी
सेवा और ईश्वर की सबसे
बड़ी पूजा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई भी कार्य अपने आपमें
न पाप है और न पुण्य। पाप और
पुण्य का निर्धारण उस कार्य के पीछे
विद्यमान दृष्टिकोण एवं उद्देश्य के
अनुसार किया जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

धर्म की सेवा, नीति और सदाचार की अभिवृद्धि में तत्परता एक ऐसी तपश्चर्या है, जिससे प्रभावित हुए बिना ईश्वर रह ही नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख एक कसौटी है, जिस पर कसकर सुखों के मूल्य समझ सकना संभव होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अध्यात्म क्षेत्र में वरिष्ठता योग्यता के आधार पर नहीं, आत्मिक सद्गुणों की अग्नि परीक्षा में जाँची जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिवार में स्वर्गावतरण उसी समय होता है जब सुमति, सहमति, सहयोग एवं संस्कार का सामंजस्य स्थापित हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी समर्पण और त्याग की प्रतिमा है। समर्पण उसकी दुर्बलता नहीं, गरिमा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नर और नारी एक ही आत्मा के दो रूप हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सज्जनता और साहसिकता का समन्वय ही आत्मिक प्रगति का सच्चा स्वरूप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्तित्व को प्रखर, परिष्कृत करने वाले सद्ज्ञान को विद्या कहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म का अर्थ है - प्रगतिशीलता और शालीनता का समन्वय, अभ्युदय और श्रेष्ठता की अविच्छिन्न समग्रता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उन्नति करना मानव जीवन का लक्ष्य और उसकी पूर्ति कर्मयोग का प्रमाण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सेवा मानवी अंतरात्मा का धर्म है। उसे अपनाये बिना व्यक्तित्व की गरिमा जागती ही नहीं, सुसंस्कारिता उगती ही नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पवित्र और प्रखर व्यक्ति ही ईश्वर के दरबार में प्रवेश पाने और अनुग्रह उपलब्ध करने के अधिकारी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन का सौन्दर्य सद्विचारों और सद्प्रवृत्तियों की पवित्रता से प्रकट होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विपन्नता की स्थिति में धैर्य न छोड़ना, मानसिक संतुलन नष्ट न होने देना, आशा, पुरुषार्थ को न छोड़ना आस्तिकता का प्रथम चिह्न है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी क्षमताओं, गुणों और कर्तृत्वों को राष्ट्र को समर्पित कर देना एक उच्च स्तरीय अध्यात्म साधना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

वास्तविक सौन्दर्य के आधार हैं-स्वस्थ शरीर, निर्विकार मन और पवित्र आचरण।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों को उपदेश देने और मार्ग दिखलाने का वही सच्चा अधिकारी होता है, जिसका आचरण स्वयं उसके आदर्श के अनुरूप हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विषयों, व्यसनो और विलासों में सुख खोजना और पाने की आशा करना भयानक दुराशा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़प्पन शालीनता से मिलता है। पद ओर प्रतिष्ठा तो उसे चमकाते भर हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म, सेवा, नीति और सदाचार की अभिवृद्धि में तत्परता एक ऐसी तपश्चर्या है, जिससे प्रभावित हुए बिना ईश्वर रह ही नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आलस्य, अकर्मण्यता और प्रमादपूर्ण जीवन में आनंद देखने वाले वस्तुतः आनन्द का रहस्य जानते ही नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अपने लिए नहीं, औरों के लिए जीते हैं वे जीवन मुक्त हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी परिवार की धुरी है, उसी की उत्कृष्टता-निकृष्टता पर गृहस्थ का उत्थान-पतन निर्भर रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रत्येक सद्गृहस्थ का प्रथम कर्तव्य है कि माता, भगिनी, पत्नी और कन्या के जिस भी रूप में नारी रहे, उसे स्वस्थ, प्रसन्न, शिक्षित, स्वावलम्बी एवं सुसंस्कृत बनाने में कुछ भी कमी न रखे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यश-अपयश मरण के उपरान्त भी सुगंध-दुर्गन्ध की तरह चिरकाल तक बने रहते हैं। वस्तुतः ये ही मनुष्य जीवन के वास्तविक उपार्जन हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अश्लील चिन्तन और लोलुप दृष्टिकोण मानसिक व्यभिचार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे कपड़े को कीड़ा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म में से दुराग्रह और पाखण्ड निकाल दो, वह अकेला ही संसार को स्वर्ग बनाने में समर्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शुद्ध व्यवहार और सदाचार समाज की सुदृढ़ स्थिति के आधार स्तम्भ हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्कृष्ट चरित्र ही मानव जीवन की कसौटी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

उत्तम विचार वाला
व्यक्ति समाज के लिए बहुत
बड़ी संपत्ति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चरित्र साधना का
मूलाधार मानसिक पवित्रता
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमात्मा ने नर और
नारी को दो भिन्न इकाइयों में
इसलिए उत्पन्न किया है कि दोनों
स्नेह, सहयोग और सामंजस्य
के आधार पर एक-दूसरे के
पूरक बन सकें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन, वचन और कर्म
से औचित्य का पालन करने
से मनुष्य के पास भय नामक
दुर्बलता आ ही नहीं सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानव जीवन एक
अनमोल अवसर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

योग्य, सुशिक्षित स्त्रियाँ
जिस परिवार, जिस समाज में
होंगी उसकी उन्नति, विकास
एवं प्रगति भी निश्चित होगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

न तो अपने लाभ की
उपेक्षा करो और न दूसरों के
लाभ में विघ्न डालो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज के लोग
परिश्रमी, ईमानदार,
सत्यनिष्ठ एवं आदर्शप्रिय होंगे
वह अपने आप उत्तरोत्तर
उन्नत होता चला जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चरित्रता मनुष्यता
की पहचान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारवान् वे हैं, जो
नाशवान् भौतिक वस्तुओं को
बटोरने की अपेक्षा आत्मिक
समृद्धि का संचय करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समस्त उन्नतियों का
मूल सदाचरण ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वस्त्रों में सादगी और
सरलता मनुष्य की महानता
का परिचय देते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समस्त उन्नतियों का
मूल सदाचरण ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारवान् वे हैं, जो
नाशवान् भौतिक वस्तुओं को
बटोरने की अपेक्षा आत्मिक
समृद्धि का संचय करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस समाज के लोग
परिश्रमी, ईमानदार, सत्यनिष्ठ
एवं आदर्शप्रिय होंगे वह अपने
आप उत्तरोत्तर उन्नत होता चला
जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

विचारवान् वे हैं जो
नाशवान भौतिक वस्तुओं को
बटोरने की अपेक्षा आत्मिक
समृद्धि का संचय करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चरित्र बल संसार में
सब बलों से श्रेष्ठ और सारी
संपत्तियों में मूल्यवान् संपत्ति
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चारित्रिक विकास के
बिना कभी सफलता स्थिर
नहीं रह सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इस नश्वर मानव जीवन
में चरित्र ही अमर उपलब्धि
है। वह मनुष्य को नर से
नारायण बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ स्त्रियों को दुःख
रहता है, उत्पीड़न सहती है,
वह कुल नष्ट हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नारी जन्मदात्री है।
समाज का प्रत्येक भावी
सदस्य उसकी गोद में पलकर
संसार में खड़ा होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आशावाद आस्तिकता है
और निराशा नास्तिकता।
आशावादी केवल ईश्वर से
डरता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य और कुछ नहीं,
मात्र भटका हुआ देवता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चा धन आत्म-
ज्ञान है, जिसके प्राप्त होते
ही मनुष्य दसों दिशाओं में
निर्भय हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ व्यक्ति का मिथ्या
अहंकार समाप्त हो जाता है,
वहाँ उसकी गरिमा आरम्भ
होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिंतन बहुतों ने पाया है,
पर ऐसे बहुत कम होते हैं, जो
चिन्तन को जीवन में उतार पाते
हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ व्यक्ति का मिथ्या
अहंकार समाप्त हो जाता है,
वहाँ उसकी गरिमा आरम्भ
होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिन्ता और चिता में
इतना ही अंतर है कि एक
अदृश्य है और दूसरी
प्रत्यक्ष।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वही जीवित है,
जिसका मस्तिष्क ठण्डा, रक्त
गरम, हृदय कोमल और
पुरुषार्थ प्रखर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्कृष्ट जीवन का
स्वरूप है-दूसरों के प्रति नम्र
और अपने प्रति कठोर होना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

संसार की अनन्त सम्पदाओं का स्वामी होने पर भी यदि कोई चरित्रहीन है, तो वह हर अर्थ में विपन्न ही माना जाएगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ व्यक्ति का मिथ्या अहंकार समाप्त हो जाता है, वहाँ उसकी गरिमा आरम्भ होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चा ज्ञान मनुष्य को केवल आत्मलीन ही नहीं बनाता, बल्कि उसे व्यावहारिक जीवन में बड़ा ही शुभ और सुन्दर भी बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ और परोपकार के दो लाभ माने गये हैं-एक आत्मोद्धार और दूसरा विश्व कल्याण।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठ जीवन तब तक यापन नहीं किया जा सकता, जब तक मनुष्य का कोई निश्चित लक्ष्य न हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मन का निर्माण है- उसका परिमार्जन और उसकी उर्वरता है-एकाग्रता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकट के भय से प्रगति पथ पर न बढ़ना केवल जीवन को जड़ता की ओर ले जाना ही नहीं, बल्कि उसे नीरस और निरुपयोगी बनाना भी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भौतिक दृष्टि से सुखी-संपन्न बन जाने पर भी यदि मनुष्य उद्देश्य विहीन और आदर्शरहित बना रहे, तो वह अपने लिए संतोष और गौरव प्राप्त न कर सकेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परस्पर प्रेम, सहानुभूति, स्वार्थरहित सेवाभाव और एक दूसरे के लिए त्याग तथा उत्सर्ग की तत्परता ही परिवार का प्रमुख लक्षण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारों से गिरे हुए व्यक्ति को परमात्मा भी नहीं उठा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हँसते-खेलते हुए एक सुविकसित फूल की तरह प्रफुल्ल जीवन-यापन करना ही पुण्य तथा परमार्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारों के अनुरूप ही चरित्र का निर्माण होता है-यह प्रकृति का अटल नियम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आंतरिक परिष्कार की ओर समुचित ध्यान देना, यही बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रथम चरण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य अपना सुधार करने में लग जाय तो वह संसार का बहुत भारी सुधार कर सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुराचारी भी अगर अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र को सुधार ले, तो वह सज्जन बन सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

जिस समाज का प्रबुद्ध वर्ग सोचता तो बहुत है, पर करता कुछ नहीं, वहीं निष्क्रियता का मरघट जैसा सन्नाटा छाया रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अज्ञान जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्कृष्ट चरित्र ही मानव जीवन की कसौटी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

फल की आतुरता प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बच्चा माता-पिता के व्यक्तित्व और स्वभाव का संगम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई व्यक्ति अच्छा, सच्चरित्र और ईमानदार है, तो उसका अधिकांश श्रेय उसकी माँ को जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दोष और पाप हमारी प्रगति में सबसे बड़े बाधक हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्म को पोषण देने वाला ज्ञान ही वस्तुतः सच्चा ज्ञान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पुरुषार्थों में सबसे बड़ा पुरुषार्थ अपने गुण, कर्म और स्वभाव को सुसंस्कृत बनाना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नरक को स्वर्ग में परिवर्तित करने की कुञ्जी मनुष्य के हाथ में है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो मन का गुलाम है, वह ईश्वर भक्त नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

माता का रिश्ता सबसे अधिक उत्कृष्ट प्रेम का परिचायक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सत्कर्म ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो मन का गुलाम है, वह ईश्वर भक्त नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिन विचारों में पूरी सच्चाई, दृढ़ता और आस्था होगी, उन्हीं विचारों के पीछे सृजन की शक्ति निवास करती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११

(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६**अमृत वचन**

सत्कर्म न करें तो
सद्विचारों का कोई महत्त्व
नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने बच्चे को अच्छा,
सच्चा और श्रेष्ठ व्यक्ति बनाने
के लिए माता का समझदार
और सुशिक्षित होना जरूरी
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

माँ न केवल बच्चे की
जन्मदात्री हैं, वरन् उसकी
निर्मात्री भी हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम कोई ऐसा काम
न करें, जिसमें अपनी
अंतरात्मा ही अपने को
धिक्कारे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानव जीवन की
सबसे बड़ी सम्पदा उसकी
बौद्धिक पूँजी ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का एकाग्र
मन उसकी उन्नति का
एकमात्र आधार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

एक मात्र निःस्वार्थ,
निष्कपट और अहेतुक सेवा
ही भगवद् भक्ति की कोटि
कीमानी जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर और मन की
गतिविधियों को नियंत्रित एवं
परिष्कृत करने का प्रयास ही
जीवन साधना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य अपना जीवन
ईश्वर के लिए लगाये इससे
बढ़कर दूरदर्शिता और कोई
नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस राष्ट्र में संत को
सम्मान नहीं मिलता, वह
पथभ्रष्ट और खोखला हो
जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिवार निर्माण का
तात्पर्य है-उस छोटी सी संस्था
में सद्भावनाओं और
सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण,
अभिवर्धन एवं परिपोषण।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अच्छा स्वास्थ्य जीवन
में किसी भी सुख की
अनुभूति के लिए सर्वप्रथम
आवश्यक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस मनुष्य ने सही
लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त न किया
हो, उसका जीवन व्यर्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्तित्व ही मनुष्य
के सुख-दुःख का उत्थान-
पतन का सहयोग-विरोध
का आधारभूत कारण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिकूलता उतनी
बाधक नहीं होती, जितनी कि
अप्रसन्न रहने की आदत।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

आत्म-परिष्कार
और आत्म-विकास का
तत्त्व दर्शन ही अध्यात्म है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गायत्री उपासना
मनुष्य मात्र के लिए
कल्याणकारी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर उपासना
वासना की आग को बुझाती
है और तृष्णा की जलन को
शान्त करती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३)

४२६४०३,

४२३५०१,

४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-२४९४११



(०१३३) ४२६४०३, ४२३५०१,
४२४३०९, ४२१०५ फैक्स- ४२३८६६

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य